www.thearyasamaj.org

वर्ष-१३ अंक-१-२
२७ अक्टूबर २०१६

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०.०० रु.

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

www.thearyasamaj.org

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-१-२

२७ सितंबर-अक्टूबर २०१६
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७.२९.४६.११३
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	दीप	4
2.	सम्पादकीय	5
3.	योग	7
4.	अच्छे कार्यों में सहयोगी बनें	9
5.	विदेशियों की दृष्टि में गाय	10
6.	श्रद्धांजलि	13
7.	शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)	15
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती	16
9.	मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों की अधिकृत सूची	19
10.	मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न	24
11.	डॉ. धर्मवीरजी को विनम्र श्रद्धांजलि	26

नवम्बर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

१ म.प्र. छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस
२ विश्वामित्र जयंती
४ गुरू गोविंद सिंह पुण्य तिथि
१० संत नामदेव एवं कवि कालीदास जयंती
१४ बाल दिवस पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती
और गुरूनानक देव जयंती
१५ बिरसा मुण्डा जयंती
१९ रानी लक्ष्मीबाई एंव इंदिरा गांधी जयंती
१७ लाला लाजपतराय बलिदास दिवस
२२ वीरांगना झलकारी बाई जयंती
२४ गुरू तेगबहादुर शहीद दिवस
२६ डॉ. हरीसिंह गौड़ जयंती

www.thearyasamaj.org

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालों जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

– प्रकाश आर्य, महू

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी
सभाप्रधान

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय :

कितनी घातक है संकीर्णता

जहां स्वार्थ सर्वोपरि हो वहां अपने दोष भी दिखाई नहीं देते हैं। **"स्वार्थी दोषात् न पश्यति"** ऐसी विचारधारा प्रत्येक अच्छे कार्य को भी गलत दिशा में मोड़ने लग जाती हैं, वहां कुतर्क का बड़ी चतुराई से शब्द व्यूह रचना व दृढ़ता से शस्त्र बनाकर उपयोग किया जाता है। ऐसे व्यक्ति यथार्त से भिन्न अपने विचार थोपने की दक्षता में महारथ प्राप्त कर लेते हैं। यह सब हमारी संकीर्णता, ओछी मानसिकता का परिणाम है। यह संकीर्णता परिवार, समाज व राष्ट्र यहां तक कि अपने स्वयं के लिए भी घातक है।

किसी भी व्यक्ति को खुले मन से किसी अच्छाई अथवा बुराई का मूल्यांकन करना चाहिए। व्यक्ति विशेष, जाति या संगठन के आधार पर किसी तथ्य को मान्य या अमान्य करना स्वार्थ या संकीर्णता है।

जब पाकिस्तानी सेना या पाक अधिकृत आतंकवादी भारत के विरूद्ध कोई हरकत कर रहे थे तो देश की विपक्षी पार्टियां प्रधानमन्त्री मोदीजी को उलाहना देकर असफल, कमजोर प्रधानमन्त्री बताकर अपनी भूमिका का पूरी सक्रियता से निर्वाह कर रहे थी।

अभी–अभी भारतीय सेना ने अपनी शौर्यता का ऐतिहासिक पराक्रम दिखाकर हैरतअंगेज कर दिया, भारत के नागरिकों ने भारतीय सेना और सत्तारूढ़ पार्टी की बड़ी प्रशंसा की, जश्न मनाए गए। यहां तक कि दुनिया के अनेक देशों ने भारत के इस कार्य को सराहा और समर्थन दिया। किन्तु दूसरी ओर दलगत राजनैतिकता में उलझे केवल अपने स्वार्थ को ही महत्व देने वाले कुछ नेता इस ऑप्रेशन पर सवाल उठाने लगे, उसकी पुष्टि मांगने लगे, तथा कुछ ने तो पाकिस्तान के झूठ में भी अपना स्वर मिला दिया और इस अभूतपूर्व शौर्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया।

मुम्बई में आतंकवादियों के दुष्कृत्य में अनेक व्यक्ति मारे गए उसी अवसर पर महाराष्ट्र पुलिस का एक ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी आतंकवादी मुठभेड़ में शहीद हो गया। किन्तु कुर्सी के भूखे भेड़ियों ने उस शहीद की शहादत पर भी उंगली उठाकर एक शर्मनाक पाप किया था।

www.thearyasamaj.org

ऐसे व्यक्तियों का समाज, संस्कृति या राष्ट्र से नाता नहीं होता है, उनके प्रति वे अपने कर्तव्यों को नहीं अधिकारों को ही महत्व देते हैं। इस दूषित पाप प्रवृत्ति के पीछे उनके स्वार्थ या संकुचित भावना उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य करती है।

वे नहीं जानते कि उनके इस प्रकार के व्यवहार से समाज व राष्ट्र के प्रति समर्पित व्यक्तियों, आम नागरिकों और बलिदानी परिवारों को कितना कष्ट होता है। इस प्रकार की नकारात्मक व छिद्रादोषण वाली विचारधारा से मनोबल टूटता है, उत्साह में कमी आती है, अनेक प्रकार की शंकाओं का जन्म होता हैं, यह सब समाज की कार्य क्षमता को बुरी तरह प्रभावित करता है। यह विपक्षी दुश्मन को अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग भी देता है।

ऐसी स्वार्थ व संकीर्णता की विचारधारा जो राष्ट्र के चार को 2+2 तीन या पांच बताने में लगी है उन्हें कोई रोकने वाला नहीं है, इसलिए उन्हें प्रोत्साहन मिलता है। सही अर्थों में इसके लिए दोषी हम हैं, जो मौन होकर सुनते हैं, सहते हैं। मौन रहना सत्य को नष्ट करना है, कहा गया **"मौनं सत्यं विनष्यति"**।

इसलिए स्वयं संकीर्णता से दूर व यथार्तता को सम्मान देना चाहिए वहीं अनुचित स्वार्थ में लिप्त संकीर्णता की भावना का पुरजोर विरोध भी करना चाहिए। यही हमारा नैतिक व राष्ट्रीय कर्तव्य ह।

वैदिक सुक्तियाँ

0 **सुशेवो राजा** (ऋ. 6.59.5)–सु सेवा करने वाला राजा है।

0 **विश्वा तरेम दुरिता** (ऋ. 7.32.15)–हम सब बुराईयों को त्यागें।

0 **सुगनो विश्वा सुपथनि सन्तु** (ऋ. 7.62.6)–हमारे सब सुपथ सुगमनीय हों।

0 **सूरः पश्यति चक्षसा** (ऋ. 9.10.9)–ज्ञानी ही ऑख से देखता है।

0 **अकर्मा दस्युः** (ऋ. 10.22.8)–कर्म न करने वाला दस्यु है।

0 **अनु वीरयध्वम्** (ऋ. 10.103.6)–निरन्तर पराक्रम करो।

www.thearyasamaj.org

योग

– आचार्य ज्ञानेश्वार्य, रोजड

प्रश्न 420 : ईश्वर–प्रणिधान किसे कहते हैं ?

उत्तर : शरीर, बुद्धि, बल, विद्या, धनादि समस्त साधनों को ईश्वर प्रदत्त मानकर उसका प्रयोग मन, वाणी तथा शरीर से ईश्वर की प्राप्ति के लिए ही करना, लौकिक उद्देश्य – धन, मान, यश आदि की प्राप्ति के लिए न करना 'ईश्वर प्रणिधान' कहलाता है। ईश्वर मुझे देख, सुन, जान रहा है, यह भावना भी मन में बनाये रखना, 'ईश्वर प्रणिधान' है।

प्रश्न 421 : ईश्वर प्रणिधान से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : ईश्वर प्रणिधान के अनुष्ठान से समाधि शीघ्र लग जाती है।

प्रश्न 422 : आसन किसे कहते हैं ?

उत्तर : ईश्वर के ध्यान के लिए जिस स्थिति में सुखपूर्वक, स्थिर होकर, बैठा जाय, उस स्थिति का नाम 'आसन' है। जैसे – पद्मासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन आदि।

प्रश्न 423 : आसन से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : आसन का अच्छा अभ्यास हो जाने पर योगाभ्यासी को उपासना काल में तथा व्यवहार काल में सर्दी–गर्मी, भूख–प्यास आदि द्वन्द्व कम सताते है तथा योगाभ्यास की आगे की क्रियाओं को करने में सरलता होती है।

प्रश्न 424 : क्या चक्रासन, धनुरासन, शीर्षासन, पश्चिमोत्तानासन आदि योग के आसन हैं ? यदि नहीं तो क्यों ?

उत्तर : नहीं, आसन के दो विभाग कर सकते हैं, पहला वे आसन जो शरीर को स्वस्थ, बलवान बनाने के लिए व्यायाम के रूप में प्रयोग करते हैं। दूसरा वे जो प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि की सिद्धि के लिए प्रयोग करते हैं। चक्रासन, धनुरासन आदि व्यायाम के आसन हैं न कि यो के आसन। अतः धनुरासन आदि को योगासन नहीं कहना चाहिए।

प्रश्न 425 : प्राणायाम किसे कहते हैं ?

उत्तर : किसी आसन पर स्थिरतापूर्वक बैठने के पश्चाम मन की चंचलता को रोकने के लिए, श्वास–प्रश्वास की गति को रोकने स्वरूप जो क्रिया की जाती है, उस क्रिया का नाम प्राणायाम है।

www.thearyasamaj.org

प्रश्न 426 : प्राणायाम कितने प्रकार हैं ?

उत्तर : महर्षि पतंजलि जी ने योगदर्शन में 4 प्रकार के प्राणायाम बताये हैं (1) बाह्य प्राणायाम (2) आभ्यंतर प्राणायाम (3) स्तम्भवृत्ति प्राणायाम (4) बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी प्राणायाम।

प्रश्न 427 : प्राणायाम करने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : प्राणायाम करने वाले व्यक्ति का अज्ञान निरन्तर नष्ट होता जाता है तथा ज्ञान की वृद्धि होती है। स्मृतिशक्ति तथा मन को एकाग्रता में वृद्धि होती है। वह रोग रहित होकर उत्तर स्वास्थ्य प्राप्त होता है।

प्रश्न 428 : प्रत्याहार किसे कहते हैं ?

उत्तर : मन के रूक जाने पर नेत्रादि इन्द्रियों का अपने–अपने रूपादि विषयों के साथ संबंध नहीं रहता अर्थात् इन्द्रियां शान्त होकर अपना कार्य बन्द कर देती हैं, इस स्थिति का नाम 'प्रत्याहार' है।

प्रश्न 429 : प्रत्याहार से क्या लाभ होता है ?

उत्तर : प्रत्याहार की सिद्धि होने से योगाभ्यासी का इन्द्रियों पर अच्छा नियन्त्रण हो जाता है अर्थात् वह अपने मन को जहां और जिस विषय में लगाना चाहता है, लगा लेता है तथा जिस विषय से मन को हटाना चाहता है, हटा लेता है।

प्रश्न 430 : धारणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : ईश्वर का ध्यान करने के लिए आँख बन्द करके मन को मस्तक, भ्रूमध्य, नासिका, कण्ठ, हृदय, नाभि आदि किसी एक स्थान पर स्थिर करने या रोकने का नाम 'धारणा' है।

प्रश्न 431 : धारणा का क्या लाभ है ?

उत्तर : मन को एक ही स्थान पर स्थिर करने के अभ्यास से ईश्वर विषयक गुण–कर्म–स्वभावों का चिन्तन करने में (ध्यान में) दृढ़ता आती है, अर्थात् ईश्वर विषयक ध्यान शीघ्र नहीं टूटता। यदि टूट भी जाय तो दोबारा सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

प्रश्न 432 : समाधि किसे कहते हैं ?

उत्तर : ध्यान करते हुए जब ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है अर्थात ईश्वर के आनन्द में साधक निमग्न हो जाता है तब उस अवस्था को समाधि कहते हैं।

प्रश्न 433 : समाधि का फल है, ईश्वर का साक्षात्कार होना। समाधि अवस्था में साधक समस्त भय, चिन्ता, बन्धन आदि दुःखों से छूटकर ईश्वर के आनन्द की अनुभूति करता है तथा ईश्वर से समाधि काल में ज्ञान, बल, उत्साह, निर्भयता, स्वतन्त्रता आदि की प्राप्ति करता है। इसी प्रकार बारम्बार समाधि लगाकर अपने मन में विद्यमान राग–द्वेष आदि अविद्या के कुसंस्कारों को दग्धबीजभाव अवस्था में पहुंचकर (नष्ट करके) मुक्ति पद (मोक्ष) को प्राप्त कर लेता है।

क्रमशः.....

www.thearyasamaj.org

बोधकथा

अच्छे कार्यों में सहयोगी बनें

लंका तक पहुंचने के लिए भगवान रामचन्द्र जी के सामने बड़ी समस्या समुद्र पार करने की थी। समुद्र पार किए बिना लंका पहुंच पाना असंभव था। सभी लोग सोचों में डूबे हुए थे कि आखिर समुद्र पर पुल कैसे बनाया जाए ?

तभी वानर सेना दल के दो सिपाही नल और नील वहां पर उपस्थित हुए। वे दोनों कुशल इंजीनियर भी थे। उन्होंने इस समस्या को हल करने की जिम्मेदारी ले ली। वे दोनों पत्थरों को इस प्रकार खोखला बनाते कि वो जल में तैरने लगते। इन तैरने वाले पत्थरों के सहारे समुद्र पर पुल बनाने का कार्य प्रारंभ हो गया।

सेना के हजारों सिपाही बड़े–बड़े पत्थरों को लाकर समुद्र के किनारे जमा करने लगे। सेना के सिपाहियों का उत्साह देखकर भगवान राम अत्यन्त पुलकित हुए। अचानक प्रभु रामचन्द्र की दृष्टि एक छोटी सी गिलहरी पर पड़ी। भगवान राम ने देखा कि वह गिलहरी समुद्र के किनारे से अपने मुंह में रेत को दबाती और ले जाकर समुद्र में डाल देती। वह लगातार इस काम को किए ला रही थी। भगवान को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे तुरन्त उस गिलहरी के पास पहुंचे, और उसे प्यार से हाथों में उठा लिया, फिर बोले – यह तुम क्या कर रही हो ?

गिलहरी ने कहा – प्रभु आप तो जानते ही है कि मैं बहुत छोटी–सी हूं। आपके सिपाहियों की तरह बड़े–बड़े पत्थर तो ला नहीं सकती। हॉ, मुझसे जितना बन सकता है, उतना कर रही हूं। आप एक अच्छे काम के लिए लंका जा रहे हैं और अच्छे कामों में दूसरों की सहायता करना मुझे बहुत ही अच्छा लगता है।

भगवान राम ने उस गिलहरी की बातों से अत्यन्त प्रसन्न होकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा। लोगों का मानना है कि गिलहरी के शरीर पर जो धारियां दिखायी पड़ती हैं, वे भगवान राम द्वारा आशीर्वाद रूप में फेरे गये हाथ की अंगुलियों के चिन्ह हैं।

इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह छोटा है, इसलिए कुछ नहीं कर सकता। कोई भी अच्छा कार्य जिससे जितना और जैसे भी बन सकता हो, उसे अवश्य करना चाहिए।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। ऋ.7/59/12

भावार्थ – हे मनुष्यों ! हम सब लोगों का उपास्य देव जगदीश्वर ही है जिसकी उपासना से पुष्टि, वृद्धि, उत्तम यश और मोक्ष प्राप्त होता है, मृत्यु का भय नष्ट होता है, ऐसे उपास्य देव का त्याग कर अन्य की उपासना हम लोग कभी न करें।

www.thearyasamaj.org

विदेशियों की दृष्टि में गाय

अमेरिका देशवासी टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर श्री मालकम आर. पेटसन लिखते हैं –

महाकवि होमर ने युद्ध, वरजिल ने आयुध, होरेस ने प्रेम, दान्ते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया, परन्तु मुझमें यदि इन सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ में हजार तारों का मानपूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता।

यदि मैं मूर्तिकार होता और संगमरमर नामक पत्थर में टांकी से अपने विचार मूर्तिकमान कर सकता तो संसार की सब पत्थर की खाने छानकर विमलतम शुभ्रतम संगमरमर की पटियॉ ढूँढ़ लाता और चन्द्र ज्योत्सना से पुलकित, निरभ्र नील आकाश से मण्डित, किसी मनोहर वन में निर्मल जल के समीप, पक्षियों के मधुर गुंजन के बीच बैठकर अपने प्रेम धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल संगमरमर का सारा खुरदरापन अपनी छेनी से छीलकर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमें से मेरे मन की गौ की मूरत निकल आती। उसके विशाल करूणामय नेत्र होते, वह अपने उभरे स्तनों में भरा हुआ पुष्टिकर पेय पान कराने की प्रतीक्षा में खड़ी और प्रेम से अमृत के नेत्र वालों को सुख, आरोग्य एवं बल का आशीर्वाद देती दिख पड़ती। गौ गाना–ताज की महारानी है। उसका राज्य सारी पृथ्वी पर है। सेवा उसका विरद है और जो कुछ लेती है, उसे सौ गुना करके देती है।

यदि आज संसार की गौएं मर जायें तो कल ही मानव जाति पर भयानक संकट आ पड़े। रेल की सड़कें, बैंक, कपास की फसल इन सबके बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते हैं, परन्तु गौ के बिना मानव जाति रोग, क्षय और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सम्मान और स्तवन करें जिनके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों–ज्यों हम लोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेगें, क्रूरता और स्वारथपरता छोड़ेंगे, त्यों–त्यों उन गौओं की हत्या करना और उनका मॉस खाना भी छोड़ देगें, जो हमें बल देती, सुख पहुंचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती है।

मि. राल्फ. ए. होने का कथन है – जो व्यक्ति अपने बाल–बच्चों को दूध मलाई और मक्खन जैसे आरोग्यवर्धक पदार्थ खाने को नहीं देता, उसे जेल में बन्द रखने की जरूरत है।

आगे वे फिर कहते हैं –

यदि आप अपनी सन्तानों को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं तो उन्हें गाय का दूध और मक्खन रोज तीन बार खाने को दीजिये।

दक्षिण भारत तथा गुजरात में आजकल दिन में कम से कम 25 बार चाय पिलाई जाती है, दूध तो एक बार भी नहीं मिलता। 90–95 फीसदी बच्चे तो

www.thearyasamaj.org

गर्भावस्था से ही चाय के आदी होकर आते हैं। सत्कार के लिए भी आज चाय पेश की जाती है। चाय रूपी भयंकर विष से आज देश विनष्ट हो रहा है।

फ्रेंक ओ. लोडेन लिखता है – शताब्दियों से कथाओं और उपन्यासों में वर्णित यौवन के उद्‌गम की खोज मनुष्य कर रहा है, पर उस आदर्श यौवन का निकटतम सानिध्य रखने वाला जो पदार्थ अब तक मिल सका है, वह गौ का दुग्ध स्तन है।

डॉ. एच. डी. के. डाइरेक्टर ऑफ नेशनल इन्स्टीट्यूट फार रिसर्च इन डेयरिंग (इंग्लैण्ड) लिखते हैं –

राष्ट्र के स्वास्थ्य में यदि सुधार करना है तो दुग्धापान का और दूध से बनी चीजों के अधिक से अधिक व्यवहार का पर्याप्त प्रचार करना चाहिए।

प्रो. एम. जे. ऐसेनो (हारवर्ड मेडिकल स्कूल) कहते हैं –

दूध ही एकमात्र पदार्थ है, जो समस्त पौष्टिक द्रव्यों से परिपूर्ण हैं और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते हैं। बढ़ते हुए बच्चों के लिए उत्तमता में इससे बढ़कर कोई चीज नहीं। शरीर को ठीक तरह से बढ़ाने और पुष्ट करने में दूध की बराबरी करने वाला कोई दूसरा पदार्थ नहीं है।

अमेरिका के प्रेसीडेंट हर्बर्ट हूवर लिखते हैं – श्वेत जाति के लोगों का भाग्य उनकी गायों के साथ दृढ़ रूप से संकलित है। दुग्धान्नों के बिना वे कभी भी जीवित नहीं रह सकेगें।

डॉ. ई. बी. मैककालग (अमेरिका) लिखते हैं –

जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है, जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज में बाल मृत्यु की संख्या बहुत घट गई है, जिन्होंने संसार में व्यापार धन्धे पर अधिकार किया है, जो साहित्य, संगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध से बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है।

श्री मिलो हेस्टिंग्स (रूस) लिखते हैं –

गाय ही सभ्य मानव समाज की धाय है। किसी भी देश की सभ्यता की उन्नति का अनुमान करने के कई साधन बताये जाते हैं। कहीं लोग पुस्तकों पर से ही मानव सभ्यता की कल्पना करते हैं, कहीं धम मन्दिरों को ही प्रधानता दी जाती है, तो कहीं बेलों की वृद्धि ही इसका मूल आधार बताया जाता है। किन्तु गाय द्वारा ही संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारी सभ्यता तो गौ प्रधान सभ्यता ही है। जहां गौ वंश उन्नत न हो वहां श्वेत जाति की गुजर नहीं हो सकती।

हम चाहते हैं कि रूस में यान्त्रिक हल और गाय का विशेष रूप से प्रचार हो। यदि इन दो विषयों की उन्नति करने में रूस यभ लाभ करे तो रूस को एक स्थायी संस्कृति के प्रवर्तक का पद गौरव प्राप्त हुए बिना नहीं रह सकता। दुग्ध व्यवसाय की उन्नति के द्वारा हम आनन्द, मेधा शक्ति और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मानव जीवन और सभ्यता का दूध के साथ एक विशेष प्रकार का संबंध है।

www.thearyasamaj.org

यूरोप में दुग्ध व्यवसाय में अग्रणी देश डेनमार्क, हालैंड और स्विटजरलैंड हैं। इनमें से एक देश राष्ट्र संघ का केन्द्र बना है और दूसरा सब राष्ट्रों के न्यायालय का मुख्य स्थान है। गोवंश संस्कृति का निर्माता है या संस्कृति ही गोवंश निर्माण करती है, यह विचार का एक विषय हो सकता है, पर मेरे विचार में दोनों एक साथ ही रहेगें।

गाय मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ हितैषी प्राणी है। तूफान, ओला, अनावृष्टि या बाढ़ आवे और हमारी फसलों को नष्ट करके हमारी आशाओं पर पानी फेर दे, किन्तु फिर भी जो बचेगा, उसी से गाय हमारे लिये पौष्टिक और जीवन धारण करने वाले आहार तैयार कर देगी। उन हजारों बच्चों के लिए तो गाय जीवन ही है, जो दूध रहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं।

हम उसकी सिंघाई, उसके सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिता के लिए उसे प्यार करते हैं। उसकी कृतज्ञता में कभी कमी नहीं आई। हमारे ऊपर दुर्भाग्य का हाथ तो होना ही चाहिए, क्योंकि हम लोग सालों से अपने कर्तव्य से गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्र के रूप में है जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ, जो हमारी सेवा का पाई–पाई चुका देती है और घर की तथा देश की रक्षा करती है। यह सर्वथा सत्य है कि –

गाय मरी तो बचता कौन।
गाय बची तो मरता कौन।।

श्री वाल्टर ए. डामर (अवर डम्ब एनीमल्स अमेरिका) मैं गौ की प्रशंसा करूँगा, किन्तु यों ही साधारण दृष्टि से नहीं, वरन् इसलिये कि वह इसकी अधिकारिणी है और ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मैं गाय को भगवत् सृष्टि के चर–प्राणियों में एक ऊँचे आदरणीय स्थान पर खड़ी देखना चाहूंगा। गाय से बढ़कर अन्य कोई भी मनुष्य का मित्र नहीं है और न गाय जैसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। अपने दीप्त, शान्त और ध्यान निमग्न नेत्रों से संसार को देखने वाली गाय के सौम्य रूप में सचमुच देवत्व भरा है। उसमें एक महत्ता और भव्यता है, जो ग्राम देवता के उपयुक्त है। उसमें शत प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से माता का सम्बन्ध है।

मैं यह नहीं मानता कि गाय एक उदास, अबोध और व्यक्तित्व शून्य प्राणी है, किन्तु ऐसा न मानने वाले किसी संशययुक्त मनुष्य को यह मनाना भी मेरे लिए कठिन है। जब तक मनुष्य अपने पशु–मित्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार न करेगा, तब तक वह उनकी अत्यन्त प्रिय मनोरम विशेषताओं के विषय में सदा अन्धेरे में ही रहेगा।

– साभार, पाणिनी प्रभा

www.thearyasamaj.org

श्रद्धांजलि

असंख्य बुझे दीपों में, जो तेल बाती जीता रहा।
प्रज्वलित करने दीपों को, तिल–तिल नित जलता रहा।।
लिए ओ३म् पताका कर में, कईबार मौत को ललकारा।
अदम्य साहस का प्रतीक बना, गुरूवर ऋषि वो प्यारा।।

बुझाकर खुद को, रौशनी जमाने में वो कर गया।
आया नहीं कोई पल, मौत से जब वह डर गया।।

एहसानों का हिसाब नहीं, कम पड़ जावें, फलक के तारें।
ले लिए जमाने के जिसने, खुद पर संकट सारे।।

पर उसकी नसीहत को, कौन कितना मान रहा।
गुरूदत्त, श्रद्धानन्द, अमीचन्द सा, दिखता अब शिष्य कहाँ।।

हर किसी पर उसका है एहसान।
ऋणों से दबा है, सारा जहान।।

किन्तु, कृतज्ञ बन नहीं पाऐ, कृतघ्न बनते जा रहे।
बोया तो था आम उसने, पर बबूल के फूल आ रहे।
पर, सभी तो जगन्नाथ नहीं, कुछ तो ऋषि के हैं प्यारे।
चल रहा संगठन आज भी, उन्हीं के सहारे।

मात्र औपचारिकता में लिपटी, श्रद्धांजलि तो एक पाप है।
अपने गुरूवर के साथ, खुला ये विश्वासघात है।।

ऋषि का बलिदान था सन्देश महान,
विश्व को श्रेष्ठ बनाने का था आव्हान,

उसे आत्मसात करना जरूरी है।
वर्ना उसके प्रति श्रद्धांजलि अधूरी है।।
कार्य अधूरा पड़ा गुरूवर का, उसे पूरा है करना,
उसी के बताए पथ पर चल, निरन्तर आगे है बढ़ना।

www.thearyasamaj.org

देख रहा जमाना तुम्हें, आशा भरी निगाहों से,
गुजरना पड़ेगा यद्यपि, कंटकाकीर्ण राहों से,
तो आओ आज फिर संकल्प करें,
अग्नि परीक्षा देकर भी, निज कर्तव्यों को पूरा करें।
जब गुरूवर के बताए पथ, हम चलने लगेगें,
तभी सही अर्थों में हम सच्चे आर्य खुद को कहेगें।।

यह विश्वास जब आर्यजन में "**प्रकाश**" आवेगा।
तभी गगन मण्डल पर, वैदिक ध्वज लहरावेगा।।

– प्रकाश आर्य, महू

उद्यानं ते पुरूषम नावयानम जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।

आ हि रोहेमममृतं सुख रथमथजिर्विर्विदथमा वदासि।।

अथर्व 8.1.6

अर्थ – हे मनुष्य ! तुझे ऊपर जाना है, उन्नति करना है, न कि नीचे जीना है। तेरे जीने के लिए दक्षता, बल प्रदान करता हूँ इस अमृतमय जीवन को सुख कार्य रूपी रथ पर, यह शरीर रूपी रथ पर चढ़कर, सवार होकर ज्ञान उपदेश कर।

जन्म, मरण, खाना–पीना, सुख–दुःख, सन्तान यह सब समान्य रूप से संसार के समस्त प्राणियों में पाया जाता है। यदि मनुष्य भी यहीं तक सीमित रह गया तो अन्य प्राणियों और इसमें क्या अन्तर रह जायेगा ? दोनों एक समान ही समझें जावेगें। इसलिए हमारी जीवन यात्रा अन्य प्राणियों जैसी न होकर श्रेष्ठ, प्रगतिशील, सुख–शान्ति, यश–कीर्ति आनन्द से पूर्ण होनी चाहिए।

www.thearyasamaj.org

शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)

– पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री, उपदेशक

धर्मप्रेमी सज्जनों, हम सब बड़े ही सौभाग्यशाली हैं, जो कि हमने पवित्र देवभूमि भारत देश में जन्म लिया है। भारत देश त्यौहारों का, पर्वों का देश है, यहां पर प्रत्येक माह में कई–कई त्यौहार तक आ जाते हैं। प्रत्येक पर्व मनाने के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य रहता है। पर्व का अर्थ जोड़, गांठ भी है और क्षति पूर्ति करना भी है। हमारे जीवन में दिनरात की दौड़ धूप से जब हम थककर निराश हताश हो जाते हैं तब यह उत्सव यह त्यौहार आकर हमारे जीवन में उत्साह भर देते हैं, उल्लास से पूरित कर देते हैं। जैसे गन्ने में तथा बांस में गॉठें मिठास और दृढ़ता को देती हैं वैसे ही यह पर्व ऊर्जा नवीनता, स्फूर्ति, कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। दीपावली का यह त्यौहार वर्ष भर के सभी त्यौहारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है, हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है, इस समय जब किसान की छह माह की मेहनत का फल घर में आता है। अनाज से घर भर जाता है। जिसे देखकर कृषक खुशी से उछलने लगता है और प्रसन्नता को प्रकट करने के लिए घी के प्रज्जवलित दीपों से घर को सजाता है। भारतीय संस्कृति त्याग और समर्पण का समर्थन करती है इसीलिए अनाज को उपयोग में लेने से पूर्व त्याग के प्रतीक के रूप में यज्ञ भगवान को लाजा की आहुति के रूप में समर्पित किया जाता है। इसे नवसस्येष्टि कहते है। होली को बासन्ती नवसस्येष्टि और दीपावली को शारदीय नवसस्येष्टि कहते है। दीपावली मनाने का दूसरा उद्देश्य यह भी है कि वर्षा के कारण घरों में सीलन हो जाती है मकड़ी, मच्छर, कीड़े–मकोड़े बढ़ जाते हैं तथा दुर्गन्धि युक्त वातावरण होने से रोग फैलने लगते हैं। इसीलिए साफ–सफाई तथा घरों की लिपाई पुताई करके स्वच्छता को आमन्त्रित किया जाता है। लक्ष्मी का स्वागत किया जाता है। स्वच्छता से मन प्रसन्न तथा तन भी पुलकित और स्वस्थ रहता है। स्वच्छता धन की सौगात लेकर आती है। स्वच्छता का ही दूसरा नाम लक्ष्मी, श्री शोभा आदि है, इसीलिए वातावरण को पवित्र और आरोग्य कारक बनाने के लिए दीपावली पर वृहद यज्ञ प्रत्येक घर में करने चाहिए। दीपकों में भी गौघृत का प्रयोग करना चाहिए, घी के अभाव में सरसों के तेल का उपयोग करें। ठीक इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में योगाभ्यास के द्वारा ओ3म् नाम के दीप से, तथा आत्मज्ञान से अन्तःकरण को प्रकाशित करें। अविद्या रूपी अन्धकार का नाश करके, शुभ कर्मों की सुगन्धि से मानसिक, बौद्धिक प्रदूषण को दूर करें। जैसे दीपावली के सघन अन्धकार को भी दीपकों के प्रकाश से नष्ट करके रात्रि को प्रकाशित और सुगन्धित कर दिया जाता है। छोटे–छोटे दीपक जब मिलकर पंक्तिबद्ध होकर प्रकाश पुंज बन जाते हैं तब वे बड़े से बड़े अन्धकार को भी नष्ट करने में समर्थ हो जाते हैं। दीपावली के इस पवित्र त्यौहार पर हम सब भी मिलकर समाज में फैली विकृतियों, भ्रान्तियों को समाप्त कर राष्ट्र को समृद्ध और सशक्त बनाने का संकल्प लें। दीपावली के इस पर्व को पवित्रता और उल्लास के साथ मनायें, साथ ही यह भी ध्यान रहे कि वातावरण को दूषित करने वाले विस्फोटक पदार्थों का स्वयं भी प्रयोग न करें तथा औरों को भी समझायें।

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती

– प्रकाश आर्य, महू

भारत भूमि प्राकृतिक सम्पदा सम्पन्न, महापुरूषों से गौरवान्वित और वर्तमान संसार की प्रथम संस्कृति से जुड़ी हुई है।

यहां जन्में अनेक महापुरूषों के ज्ञान का प्रकाश संसार में फैला और आज भी फैलता जा रहा है। यह ज्ञान चाहे आध्यात्म के रूप में, दर्शन के रूप में या अन्य सामाजिक कार्यों के कारण हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की गणना भी एक महान विद्वान, समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता के रूप में की जाती है। यद्यपि आज बहुत से व्यक्ति महर्षि की जीवनगाथा से अनभिज्ञ हैं कई तो स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द को एक ही मान बैठते हैं।

महर्षि का जीवन चरित्र पढ़ने पर पता लगता है कि इस महान विभूति ने किस प्रकार के कार्य किये।

वेद, जिन्हें धर्म गुरूओं ने विद्वानों ने धर्म का आधार माना था उसे यह समाज भूल चुका था। तरह–तरह की कपोल कल्पित गाथाएं जोड़ दी गई थी और उन्हें लुप्त होना बताया। पाताल में उन्हें जाना बता दिया था। कुछ विदेशी इन वेदों को गड़रियों के गीत के समान उपमा देते थे। किन्तु आदि शंकराचार्य के पश्चात एकमात्र स्वामी दयानन्द ने पुरूषार्थ कर वेदों के महत्व को समाज के समक्ष रखा। वेदों का महत्व समझाते हुए परमात्मा के इस ज्ञान की पूर्णता, सार्थकता और सत्यता पर गिरा हुआ परदा हटाकर भटकी हुई संस्कृति को पुनः सत्य पथ का दर्शन करा दिया।

संसार के महापुरूषों ने किसी असत्य मान्यता का पाखण्ड का, सामाजिक बुराईयों का खुलकर विरोध नहीं किया वे अपनी बात कहते गये, जमाना सुनता गया। इस कारण समाज में उनका विरोध नहीं हुआ। किन्तु महर्षि का विचार अपना था। वे मानते थे जब तक गलती का एहसास नहीं होगा उन्हें उससे हटाया नहीं जावेगा। तब तक सत्य का असर होना संभव नहीं है। जैसे किसी पुराने खण्डहर के स्थान पर नया भवन बनाना हो तो पहले की बेकार सामग्री हटाना पड़ेगी तभी नए भवन का निर्माण संभव है। इस कारण महर्षि ने समाज में व्याप्त पाखण्ड, सामाजिक बुराईयों का खण्डन किया और उन्हें सनातन धर्म की मान्यता के विरूद्ध बताया। इस कारण ऐसे अनेक व्यक्ति जो इन बुराईयों में लिप्त थे, पाखण्ड फैलाकर अपने स्वार्थ सिद्धी करने में लगे थे वे स्वामी दयानन्द के विरोधी हो गए अनेक बार उनकी अवहेलना और अपमान किया और प्राणघातक हमले तक किये।

www.thearyasamaj.org

किन्तु सत्य का दिवाना ईश्वर सन्देश फैलाने की धुन में व्यस्त समाज सुधार की धुन का पक्का, फक्कड़ वीर सन्यासी इन प्रहारों से रूका नहीं, हटा नहीं, घबराया नहीं वरन् उसक कार्य में और तेजी तथा दृढ़ता नित्य बढ़ती गई और आज जमाना उन सब कार्यों को मानता है कर रहा है, जिसके लिये महर्षि ने शंखनाद किया था। संक्षेप में एक नजर उन कार्यों पर डालें जो महर्षि ने प्रारंभ किये थे।

बाल विवाह गलत है, सतिप्रथा गलत है, जन्म से नहीं अपितुं कर्म से वर्ण या जाति को मानना चाहिए, छुआछूत एक अपराध है, विद्या प्राप्त करना सबका अधिकार है, बलि प्रथा अधर्म है, जीवित माता–पिता की सेवा, सन्तुष्टि ही सच्चा श्राद्ध है, तर्पण है, स्वदेशी राज्य सर्वोपरि होता है।। परमात्मा एक है, सबकुछ परमात्मा की कृपा से प्राप्त है, परमात्मा ही सर्वोपरि है। निराकार है, अजन्मा है, सर्वव्यापक है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए आदि अनेक विचार महर्षि ने समाज को दिए, जिनमें अधिकांश पर आज कानून बन गया।

समाज सुधार के कार्यों के साथ–साथ महर्षि ने आध्यात्म के मूल से समाज को जोड़ने का प्रयास किया। देश के अनेक राजा उनके शिष्य थे, जिन्हें महर्षि ने धर्म शिक्षा प्रदान की। महर्षि का यह विचार था कि यदि राजा सुधर जावे तो उसका प्रभाव प्रजा पर अवश्य होगा।

दुनिया ने कहा आगे बढ़ो परन्तु महर्षि दयानन्द का नारा था **"वेदों की ओर लोटो"**

महर्षि का ही सद्प्रयास कहा जायेगा जिसके कारण आज गायत्री मन्त्र, यज्ञ, यज्ञोपवीत व वेद पाठ आदि का जन साधारण को अधिकार प्राप्त हो गए अन्यथा केवल जाति विशेष परिवार में जन्म लेने वालों को ही इन्हें अपनाने का एकधिकार था। महिलाओं को वेद पढ़ने व शिक्षा पर तो बहुत बड़ी पाबन्दी थी किन्तु महर्षि के प्रयास से इन अज्ञानमयी मान्यता का अन्त हुआ और संसार में पहला कन्या गुरूकुल व पहली कन्या पाठशाला महर्षि के अनुयायी आर्य समाज के समर्थकों ने प्रारंभ की। आज संसार में अनेक देशों में वेद पाठी विद्वान जाकर सनातन धर्म का प्रचार कर रहे हैं। यह महर्षि की ही कृपा है।

महर्षि के ही प्रयास का परिणाम है नारी जाति को शिक्षा के प्रति सहयोग प्रोत्साहन आज नारी शक्ति समाज, आध्यात्म व राजनीति के क्षेत्र में शीर्ष स्थानों पर पहुंच रही है।

भारत की स्वतन्त्रता में महर्षि का अद्भुत अनूठा योगदान है। मंगल पाण्डे की योजना से जब ब्रिटिश साम्राज्य 1957 की क्रान्ति से घबराया तो उसने बड़ी समझदारी से भारतीय अंग्रेज हुकुमत के लिये मानसिक रूप से सौहार्दता व सहयोग का वातावरण निर्मित करने की चाल चली।

www.thearyasamaj.org

ब्रिटिश गव्हरमेंट द्वारा एक फरमान जारी किया गया कि हमने अपने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को यह आदेश जारी कर दिये हैं कि किसी भी भारतीय को उसके धार्मिक कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यक्रमों में कोई रूकावट न डालें। जो ऐसा करेगा वह अधिकारी दंडित किया जावेगा। आगे कहा आप सब भारतीय अपने–अपने कार्यों के लिये स्वतन्त्र हैं।

हमें तो परमात्मा ने इस देश की सुख शान्ति व समृद्धता के लिये भेजा है। कुछ दिनों में हम यहां सुख शान्ति का वातावरण निर्मित करेगें प्रत्येक को आर्थिक रूप से सम्पन्न कर देगें आप हमारा सहयोग करें।

इस घोषणा से भारतीय अंग्रेजों के प्रति सद्भावना रखने लगे, भारतीयों की स्वतन्त्रता की भावना को ठण्डा करने में अंग्रेज सफल होते दिखने लगे। तभी महर्षि ने यह सन्देश दिया विदेशी राजा कितना भी कृपा करने वाला क्यों न हो पर स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता।

महर्षि के अंग्रेजी हुकूमत में ऐसे प्रचार से जो एक बड़ी हिम्मत का कार्य था। डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने देहली की आम सभा में महर्षि के इस शौर्यपूर्ण कार्य की प्रशंसा की तथा स्वराज्य की इसे पहली घोषणा बताया।

महर्षि को अंग्रेज बागी फकीर के रूप में पुकारते थे। महर्षि ने स्वराज्य के लिये सन् 1960 में लगभग प्रयास तेजी से प्रारंभ किये। तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई भी महर्षि के सम्पर्क में आये। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, काकोरी काण्ड के प्रमुख पं. रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, मदनलाल ढ़ींगरा, वीर सावरकर महान के गुरू पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक क्रान्तिकारी व स्वतन्त्रता संग्राम के नेता महर्षि के विचारों से प्रभावित हुए और मॉ भारती की आजादी में बलिदानी इतिहास के नायक बने। इसीलिए तो डॉ. पटटाभिसीतारमैया ने कांग्रेस का इतिहास लिखते समय लिखा देश की आजादी में बहुत बड़ा भाग आर्य समाज के अनुयायियों का है। महर्षि का कार्य समाज के लिए प्राणीमात्र के लिये सत्य सनातन धर्म के लिये व राष्ट्र के लिये था। इसका विरोध खूब हुआ। 16 बार जहर पान करना पड़ा और अन्त में दुष्टों की योजना से जहरपान से रूग्ण अवस्था में जीवन मृत्यु से जूझते हुए दीपावली अमावस्या की काली रात्रि में देहत्याग कर अमरत्व को प्राप्त किया।

ऐसे निष्काम कर्मयोगी को बार–बार नमन्। उनके चरणों में पुष्पांजलि अर्पित।

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया
जिनके खूं से जले चिरागे वतन।
आज जगमगाते मकबरे उनके
जिन्होंने बेचे थे शहीदे कफन।।

www.thearyasamaj.org

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों की अधिकृत सूची

चंबल संभाग –

क्र. नाम	जिला
1. बड़ेरा	दतिया
2. भिण्ड	भिण्ड
3. महिला भिण्ड	भिण्ड
4. अकलोनी	भिण्ड
5. गोरमी	भिण्ड
6. मोहनपुरा	भिण्ड
7. मुरैना	मुरैना
8. अम्बाह	मुरैना
9. सोईकला	श्योपुर
10. चतुर की गढ़ी	मुरैना
11. रायपुरा	श्योपुर
12. चॉद का पुरा	मुरैना
13. श्योपुर कलां	श्योपुर
14. दोनियापुरा	भिण्ड
15. सर्वा	भिण्ड
16. पोरसा	मुरैना
17. सुरपुरा	भिण्ड
18. लालपुरा	भिण्ड

ग्वालियर संभाग –

क्र. नाम	जिला
1. नया बाजार	ग्वालियर
2. चित्रगुप्तगंज	ग्वालियर
3. लोहामण्डी	ग्वालियर
4. मुरार (बारादरी)	ग्वालियर
5. डबरा	ग्वालियर
6. बिलौआ	ग्वालियर
7. गोसपुरा	ग्वालियर
8. गंगाविहार कॉलोनी गोले का मन्दिर	ग्वालियर
9. पवनसुत कॉलोनी	ग्वालियर

गुना संभाग –

क्र. नाम	जिला
1. ब्यावरा	राजगढ़
2. सारंगपुर	राजगढ़
3. नरसिंहगढ़	राजगढ़
4. राघोगढ़	गुना
5. गुना	गुना
6. अशोक नगर	अशोक नगर
7. पिपरई	अशोक नगर
8. शिवपुरी	शिवपुरी
9. महिला आर्य समाज शिवपुरी शिवपुरी	
10. मुंगावली	अशोक नगर
11. राजगढ़	राजगढ़
12. मछावली	शिवपुरी
13. गुलावता	राजगढ़
14. शेरपुरा	राजगढ़
15. फतेहपुर	शिवपुरी
16. ऐजवारा	शिवपुरी
17. मोहन परगना, कोलारस, शिवपुरी	
18. सिरसौद चौराहा	शिवपुरी

www.thearyasamaj.org

इन्दौर संभाग –

क्र.	नाम	जिला
1.	मल्हारगंज	इन्दौर
2.	दयानन्दगंज	इन्दौर
3.	संयोगितागंज	इन्दौर
4.	बी.के.सिंधी कॉलोनी	इन्दौर
5.	भागीरथपुरा (मोहतानगर)	इन्दौर
6.	नगर कोठारी मार्केट श्रद्धानन्द अनाथालय	इन्दौर
7.	न्यू पलासिया	इन्दौर
8.	राऊ	इन्दौर
9.	रंगवासा	इन्दौर
10.	महू	इन्दौर
11.	सांवेर	इन्दौर
12.	देपालपुर	इन्दौर
13.	गौतमपुरा	इन्दौर
14.	धार	धार
15.	कुआ	बड़वानी
16.	कसरावद	खरगौन
17.	नान्दरा	खरगौन
18.	गोगांवा	खरगौन
19.	बड़वानी	बड़वानी
20.	सनावद	खरगौन
21.	सुन्द्रेल	खरगौन
22.	कोदरिया, महू	इन्दौर
23.	रसलपुरा, बोरखेड़ी,महू	इन्दौर
24.	मुल्ठान	इन्दौर
25.	धरमपुरी	इन्दौर

उज्जैन संभाग –

क्र.	नाम	जिला
1.	देवास	देवास
2.	उज्जैन	उज्जैन
3.	बड़नगर	उज्जैन
4.	महिदपुर	उज्जैन
5.	करजू	शाजापुर
6.	विक्रमपुर (मौलाना)	उज्जैन
7.	नागदा जंक्शन	उज्जैन
8.	नलखेड़ा	शाजापुर
9.	खाचरोद	शाजापुर
10.	डोंगरगांव	शाजापुर
11.	कानड़	आगर
12.	शाजापुर	शाजापुर
13.	पनवाड़ी	शाजापुर
14.	चौमा	शाजापुर
15.	बेरछा	शाजापुर
16.	अरोलिया	शाजापुर
17.	मण्डोदा	शाजापुर
18.	बुरलाय	शाजापुर
19.	फावका	शाजापुर
20.	सिंगावद	शाजापुर
21.	मोहन बड़ोदिया	शाजापुर
22.	राजोदा	देवास
23.	शुजालपुर मण्डी	शाजापुर
24.	टिगरिया	शाजापुर
25.	खजूरिया	उज्जैन
26.	खरसौद कलां	उज्जैन
27.	चीकली	उज्जैन
28.	सुवासा	उज्जैन
29.	आगर	आगर
30.	झौकर	शाजापुर

www.thearyasamaj.org

उज्जैन संभाग –

क्र.	नाम	जिला
31.	सुसनेर	शाजापुर
32.	बगावत	शाजापुर
33.	चिकली	देवास
34.	बेहरी	देवास
35.	बागली	देवास
36.	चापड़ा	देवास
37.	देवगढ़	देवास
38.	पोलायकला	शाजापुर
39.	रंथ भंवर	शाजापुर
40.	खेड़ा नेवज	शाजापुर
41.	जामली	शाजापुर
42.	अम्बादेव	आगर
43.	चिप्या	आगर
44.	गिरोली	शाजापुर
45.	दमदम	शाजापुर
46.	हरमन खेड़ी	शाजापुर
47.	कुण्डी खेड़ा	शाजापुर
48.	करनावद	शाजापुर
49.	खरेली	देवास
50.	झूटावद	उज्जैन
51.	डूंगरिया	उज्जैन
52.	निपानिया करजू	शाजापुर
53.	खाटसूद	शाजापुर
54.	चिकली लाला	शाजापुर
55.	हरनावदा	आगर
56.	गिरोली	शाजापुर
57.	पचलाना	शाजापुर
58.	रामड़ी	शाजापुर
59.	विनायगा	शाजापुर
60.	चाचाखेड़ी	शाजापुर

उज्जैन संभाग –

क्र.	नाम	जिला
61.	गुलावता	राजगढ़
62.	इकलेरा	आगर
63.	शिवगढ़	आगर
64.	रायपुरिया	शाजापुर
65.	गुडारिया	शाजापुर
66.	बिजनाखेड़ी	शाजापुर
67.	नईसामत्री	शाजापुर
68.	अरन्या	शाजापुर
69.	राजाखेड़ी	आगर
70.	पिपल्याघारा	शाजापुर
71.	पचलासी	उज्जैन
72.	पानखेडी	शाजापुर
73.	शेरपुरा	राजगढ़
74.	छोटी पोलाई खुर्द	शाजापुर
75.	नलवा	उज्जैन
76.	बोरखेड़ी	आगर
77.	भड़का	आगर
78.	गंगापुर	आगर
79.	चन्दूखेड़ी	उज्जैन
80.	सारंगाखेड़ी	आगर
81.	पीपल्याचाचा	आगर
82.	उमरिया	आगर
83.	निपानिया हनुमान	आगर
84.	पूरसपुरी	आगर
85.	रणायरा केलवा	आगर
86.	लटुरी गुर्जर	आगर
87.	मैना	आगर
88.	पीपल्या नानकर	आगर

www.thearyasamaj.org

भोपाल संभाग –

क्र. नाम	जिला
1. दयानन्द चौक	भोपाल
2. टी. टी. नगर	भोपाल
3. महावीर नगर	भोपाल
4. बी.एच.ई.एल. (पिपलानी)	भोपाल
5. नगर सीहोर	सीहोर
6. सीहोर गंज	सीहोर
7. इच्छावर	सीहोर
8. बैरसिया	भोपाल
9. धर्मरा	भोपाल
10. ललरिया	भोपाल
11. आष्टा	सीहोर
12. खामखेड़ा बैजनाथ	सीहोर
13. बाड़ी	रायसेन
14. बरेली	रायसेन
15. मसूदपुर	रायसेन
16. विदिशा	विदिशा
17. महिला आ. स. विदिशा	विदिशा
18. वर्धा	विदिशा
19. कुरवाई	विदिशा
20. महिला आ.स.कुरवाई	विदिशा
21. गंज बासोदा	विदिशा
22. सिरौंज	विदिशा
23. शमशाबाद	विदिशा
24. सुल्तानपुर	रायसेन
25. लटेरी	रायसेन
26. मण्डीदीप	भोपाल
27. महलुआ चौराह, कुरवाई	विदिशा
28. कजलास	सीहोर
29. मेहतवाड़ा	सीहोर
30. मण्डी	सीहोर
31. कुरावर	सीहोर
32. खैरीटप्पा	रायसेन
33. गौहरगंज (औबदुल्लागंज)	रायसेन
34. मुहाली चौराहा	सीहोर
35. हरनावदा	सीहोर
36. करमनखेड़ी	सीहोर
37. निपानियां कला	सीहोर
38. ऊंची ललोई	भोपाल
39. श्रद्धानन्द ललरिया	भोपाल
40. कोठरी	सीहोर
41. खजूरिया कासम	सीहोर
42. भवरी कला	सीहोर

रतलाम संभाग –

क्र. नाम	जिला
1. रतलाम नगर	रतलाम
2. रेल्वे कॉलोनी, रतलाम	रतलाम
3. थान्दला	झाबुआ
4. मन्दसौर	मन्दसौर
5. पीपल्या मण्डी	मन्दसौर
6. नारायणगढ़	मन्दसौर
7. पंथ बरखेड़ी	मन्दसौर
8. कनगेटी	मन्दसौर
9. खेड़ा खदान	मन्दसौर
10. नीमच	मन्दसौर
11. जावद	मन्दसौर
12. गरोठ	मन्दसौर
13. ढ़ाबला	मन्दसौर
14. लूना हेड़ा	मन्दसौर
15. टकरावद	मन्दसौर
16. जावरा	रतलाम
17. वही पार्श्वनाथ	मन्दसौर
18. नैनोरा	मन्दसौर

www.thearyasamaj.org

रतलाम संभाग –

क्र.	नाम	जिला
19.	बूढ़ा	मन्दसौर
20.	भीमकुण्ड	झाबुआ
21.	सूजापुरा	झाबुआ
22.	आक्यांकला	रतलाम
23.	ताना	रतलाम
24.	बालागुड़ा	मन्दसौर
25.	रणायरा	रतलाम
26.	बादरी	मन्दसौर
27.	देहरी	मन्दसौर
28.	कजाड़ा	मन्दसौर
29.	सैलाना	रतलाम
30.	धामनौद	रतलाम

नई समाजों की स्थापना –

इन्दौर संभाग : हातोद, पेमलपुर, करकी, मोगांव, दिलावरा, गाजनोद, सन्दला, धामनोद, कवड़िया

रतलाम संभाग : मेघनगर, महिला आर्य समाज, नीमच

चंबल संभाग : नूनहड़, प्रतापपुरा

उज्जैन संभाग : पिपल्या कुमार, मेनपुर, रलायती, पिपलोन कलां, महारूण्डी, सारसी, चिकली सोथिया, पालड़ा वड़ा, कलारिया, कादमी, गुराड़ियापीर

प्रत्यहं प्रतिवेक्षेत नरः चरितात्मनः।

किन्नु पशुभिस्तुल्यं किन्नु सत्पुरषैरीति।।

अर्थात् – हमें आत्म चिन्तन करना चाहिए कि कहीं मेरा जीवन पशु तुल्य तो नहीं है ? या फिर महापुरूषों के समान प्रगतिशील है।

निश्चित ही जीवन मनु यों में श्रेष्ठ जनों की तरह होना चाहिए। यही मानव जीवन की सार्थकता है। अपने घरों में, दुकानों में, कार्यालयों में महापुरूषों के चित्र इसीलिए लगाते हैं ताकि उन्हें बार–बार देखकर उनके कार्यों का स्मरण कर उनका अनुसरण हम कर सकें।

मात्र खाने–पीने, ऐशो आराम में जिन्दगी बिताने का अर्थ है परमात्मा की अनमोल कृति मानव जीवन का दुरूपयोग करना, उसकी उपेक्षा करना।

www.thearyasamaj.org

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

भोपाल। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल के त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 1/10/2016 को उज्जैन में सम्पन्न हुए। प्रान्त के 300 से अधिक सदस्यों की उपस्थिति में गरिमापूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य पूर्व प्रधान श्री दलवीरसिंह राघव एवं श्री भगवानदासजी अग्रवाल का अभिनन्दन किया गया।

सिंहस्थ 2016 में जिन सक्रिय सदस्यों ने विशेष सहयोग दिया उनका एवं सिंहस्थ मेला कार्यकारिणी के श्री लक्ष्मीनारायण आर्य, श्री गोविन्द आर्य, श्री ललित नागर, श्री राजेन्द्र व्यास, श्री राजेन्द्र शर्मा का भी प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मान किया गया।

0 कार्यक्रम में उपस्थित प्रत्येक सदस्य उत्साह से पूर्ण था, इसका प्रमुख कारण यह रहा कि विगत सत्र के 2 वर्षों में 37 सैंतीस आर्य समाजों की स्थापना की गई तथा प्रचार कार्य में काफी वृद्धि हुई।

0 विगत सत्र में ही सभा के पास तीन (फोर व्हीलर) वाहन प्रचार प्रसार व सम्पर्क हेतु उपलब्ध हुए। सभा से अनेक नए कार्यकर्ता जुड़े।

www.thearyasamaj.org

0 पहलीबार सभा की ओर से हजारों की संख्या में साहित्य की प्रतियां निःशुल्क वितरित की गई। सभा की ओर से साहित्य व प्रचार सामग्री का प्रकाशन हुआ।

0 आर्य युवा संगठन की योजना बनाकर श्री समीर गांधी को संयोजक बनाया गया।

0 5 सदस्यीय वैचारिक मण्डल (थिंक टैंक) गठित किया गया, जिसमें प्रमुख न्यायमूर्ति श्री वीरेन्द्रदत्तजी ज्ञानी, डॉ. अखिलेश शर्मा, मेजर आर्य ऋषि तिवारी, डॉ. जयपालसिंह आर्य एवं समीर गांधी को मनोनीत किया गया।

0 सिंहस्थ के अवसर पर लिए गए निर्णय के अनुसार प्रान्त में योग एवं नशा मुक्ति हेतु समिति का गठन किया गया, जिसमें संयोजक श्री वेदप्रकाश आर्य (आई. जी. पुलिस) भोपाल, सदस्य डॉ. दक्षदेव गौड़ एवं श्री गोविन्दराम आर्य मनोनीत किए गए। 0 आर्य समाज की गतिविधियों को और सशक्त करने हेतु जिला स्तर पर प्रभारी, सहप्रभारी तथा तहसील स्तर पर संयोजक मनोनीत किए जावेगें।

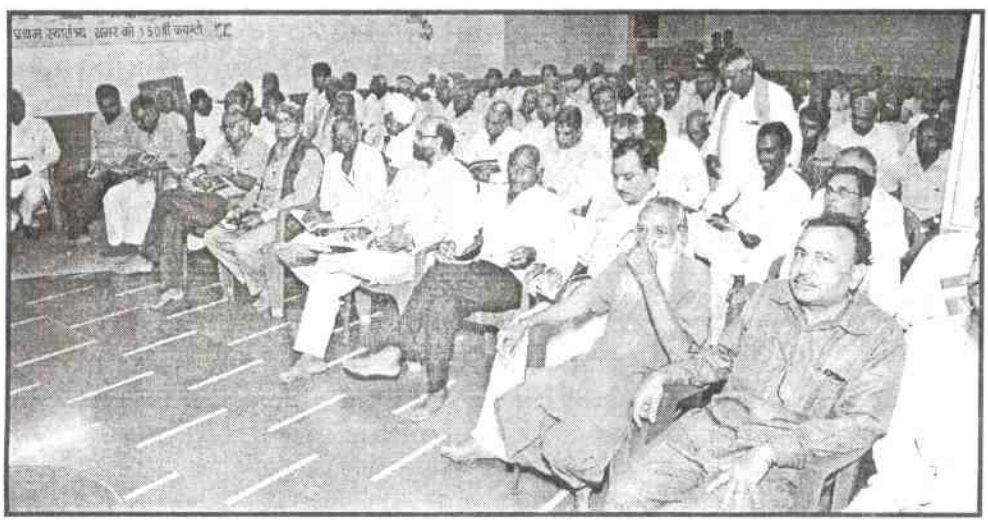

निर्वाचन सर्वानुमति से सम्पन्न हुए, किसी भी पद हेतु दो नामों का प्रस्ताव नहीं हुआ। सभा प्रधान के लिए श्री इन्द्रप्रकाशजी गांधी एवं सभामन्त्री के लिए श्री प्रकाशजी आर्य सर्वानुमति से निर्वाचित किए गए। इसके अतिरिक्त अन्य 33 सदस्यीय कार्यकारिणी का भी सर्वानुमति से निर्वाचन हुआ।

नई कार्यकारिणी का स्वागत किया गया।

www.thearyasamaj.org

डॉ. धर्मवीरजी को विनम्र श्रद्धांजलि

डॉ. धर्मवीर जी का असामयिक निधन सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उन्होंने अपने जीवन में वैदिक धर्म के प्रचार को प्राथमिकता दी और देश विदेश में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। अन्त समय भी उनका धर्म प्रचार के साथ ही समाप्त हुआ।

डॉ. धर्मवीर का जीवन यथा नाम तथा गुण की सार्थकता को पूर्ण करता था, वे धर्मवीर भी थे और कर्मवीर भी। सादा जीवन उच्च विचार को उन्होंने पूर्णतः आत्मसात किया था। आज पूरे देश में परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान को एक राष्ट्रीय स्तर का दर्शनीय व प्रशिक्षण केन्द्र बनाने में डॉ. धर्मवीर जी का बहुत बड़ा योगदान था। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे स्पष्ट लेखक और स्पष्ट वक्ता थे। प्रायः विद्वानों के साथ स्पष्टता की कमी रहती है, वे अपने संबंध व लोकप्रियता के कारण अनुचित बातों का भी विरोध नहीं कर पाते हैं और सबको प्रसन्न रखने का प्रयास करते हैं। किन्तु डॉ. धर्मवीर जी में यह विशेषता थी वे असैद्धांतिक और असत्य बातों को सहन नहीं करते थे और तुरन्त उसका प्रतिकार करते थे। उनकी लेखनी और वाणी दोनों ही स्पष्ट थी।

आज उनकी कमी सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए एक बहुत बड़ी क्षति बनी है। विद्वान और कर्मवीर योद्धा के रूप में हमने एक असाधारण व्यक्ति को खो दिया, जिसकी पूर्ति कब होगी, कैसे होगी यह कहना मुश्किल है। डॉ. धर्मवीरजी के कर्म जनहित के, परमार्थ के और सत्य सनातन धर्म के कार्य से ओतप्रोत थे इसलिए उन्हें सद्गति तो मिलना ही चाहिए किन्तु फिर भी उनकी सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

(प्रकाश आर्य)
सभामन्त्री
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

www.thearyasamaj.org

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

ईश्वर को पाने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी चाहिए।
आर्य समाज

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू

AGENT # 98262-71062